कुसम कुमार के नाटकों में अभिव्यक्त क्रांति चेतना

(लघुशोध-आलेख)

लेखक
डॉ.संगीता शरणप्पा उप्पे
हिंदी विभाग
उज्वल ग्रामीण महाविद्यालय, घोणसी
ता. जकछकोट जि.लातूर

सारांश(Abstract):— ' साहित्य का समाज से गहरा सम्बन्ध है। समाज में घटित विविध समस्याओं का चित्रण करना ही साहित्य है। हर परिस्थितियों में होनेवाली प्रक्रिया घटनाओं से लेखनी नया मोड लेती है। मजबुरियों के साथ डटकर लड़ना सिखाता है। हालात कैसे भी होए उसे स्विकार कर आनेवाले पल को सुंदर बनाने की कोशिश करता है। इसलिए साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्य समाज का एक अभिन्न अंग है। साहित्य और समाज का रचयिता मनुष्य ही हे। मनुष्य ने सामाजिक सौंदर्यशास्त्र को भली-भाँति जानता है। अपनी कल्पना और बुद्धि से लेखनी के माध्यम से किसे सौंदर्यए अलंकार में ढॉलना और किसे निचापन दिखाना यह उसके हाथ में होता है। समाज कुछ भी कहे, उसके दृष्टिकोण में वह साहित्य ही है। इसलिए साहित्यकार का सबसे बडा कलाकार माना जाता है।

बीज शब्द– साहित्य समाज, दलित, चेतना, क्रांति, रावणलीला, सामाजिक समता

साहित्य का समाज से गहरा सम्बन्ध है। समाज में घटित विविध समस्याओं का चित्रण करना ही साहित्य है। हर परिस्थितियों में होनेवाली प्रक्रिया घटनाओं से लेखनी नया मोड लेती है। मजबुरियों के साथ डटकर लढने सिखाता है। हालात कैसे भी हो, उसे स्विकार कर आनेवाले पल को सुंदर बनाने की कोशिश करता है। इसलिए साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्य समाज का एक अभिन्न अंग है। साहित्य और समाज का रचयिता मनुष्य ही हे। मनुष्य ने सामाजिक सौंदर्यशास्त्र को भली-भाँति जानता है। अपनी कल्पना और बुद्धि से लेखनी के माध्यम से किसे सौंदर्य, अलंकार में ढॉलना और किसे निचापन दिखाना यह उसके हाथ में होता है। समाज कुछ भी कहे, उसके दृष्टिकोण में वह साहित्य ही है। इसलिए साहित्यकार का सबसे बडा कलाकार माना जाता है। वही साहित्य मनुष्य को अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करे, समाज और संस्कृतिए नैतिक मूल्य, सामाजिक समस्याएँ, मानसिक एवं वैयक्तिक विकास और जीवन मूल्यों को समझना यही दिशा देने का कार्य करती है। इसी दिशा में हम अपना पथए राह ढूँढ लेते है। अगर पथदर्शक सही मिला तो राह पर चलने में कोई कठिनाईयाँ नहीं होगी या कम होंगे। हर इन्सान में कोई-न-कोई खुबियाँ जरूर होती है किन्तु हम उसे महसूस ही नहीं करते। सबसे पहले स्वयं स्वाध्याय करना आवश्यक है। हमारे पथदर्शक डॉ. बाबासाहब ने दलित, चेतना, क्रांति जैसे शब्दों का परिचय करवाकर जागृत बनाया, संघर्ष और संघटीत रहने की सिख दी। इस विचार प्रणालियों ने इन्सान के अंदर ताकत भरने की, सोये हुए लोगों को जगाने का काम किया है। तो कभी रुला भी सकती है। कभी हँसते, कभी राते है तभी तो अपने और पराये समझ में आते है।

साहित्य एक नशीली दवा है। यह अन्ननलिका से पेट में नहीं जाती। यह तो सिधे दिल से मन मस्तिष्क कि ओर प्रवाहित होता है। मस्तिष्क जागने और जगाने का कार्य करती है। नया उमंग भर देती हे। इसी जोश ने कोई साहित्य सूजन में लगेगा, कोई समाजसेवा में जुड जाएगा और दिन-दलित, कमजोर, बेबस, लाचार, मजबूर, शोषित और पिडितों का दाता बन जाता है। हमारे प्राचीन विद्वानों ने साहित्य की परिभाषा देते हुए यह बताया है कि साहित्य सागर से भी गहरा है, परमानंद प्रदान करनेवाला सच्चा साधन है। दलित साहित्यकार ने जब साहित्य लिखना शुरु किया, तबसे आज तक उनकी पिडाओं को ही व्यक्त किया है। यह साधन हो सकता है लेकिन समाधान नहीं। दलित साहित्यकार के साहित्य में दर्द है, अन्याय के विरुद्ध लढने की पुकार है, समता और स्वतंत्रता की भीख मांग रहे है आदि अनेक समस्याएँ, पिडाएँ साहित्य में दिखाई देती है। कुसुम कुमार के नाटकों में दलित क्रांति या दलित चेतना जागृत करती है। विशेषतः "दलित" को लेकर लोगों की भावनाओं को निचा बताने की कोशिश की जा रही है। इसे रोकने के लिए साहित्य, पत्र-पत्रिकाएँ और समाचार पत्रों के माध्यम से लोगों तक पहुँचाने का कार्य करने लगे। "व्यक्ति पर जाति का प्रभाव और नियंत्रण जन्म से लेकर मृत्यु तक अनवरत बना रहता है। उसकी सामाजिक मनोवृत्ति और क्रिया पद्धति जाति संस्था से ही उदीयमान होकर नियंत्रित और संबंद्धित होती रहती है। व्यक्ति का विकास, विवाह, खान-पान, पारस्परिक सम्बन्ध, व्यवसाय आदि जाति के योगदान पर ही निर्भर करता है।"

"दलित" जाति नहीं, एक धर्म नहीं, बल्कि सभी तरह के दबावों और शोषणों से मुँहतोड जबाब देनेवाली एक समाज का पर्यायवादी शब्द है। "दलित" शब्द क्रांति से उत्पन्न है, उसकी निशानी भी है। दलितों को ईश्वर ने किसी के मुख से, पाँव से और हाथ से बनाया हुआ नहीं। "दलित" शब्द केवल जातीयता तक ही सीमित नहीं है क्योंकि इस शब्द के माध्यम से अनेक प्रकार की अर्थाभिव्यक्ति होती है। इस तरह एक विशिष्ट प्रकार की सामाजिक स्थिति को अनुभव करनेवाला समाज ही दलित है।" इसी अनुभवों को नाटक को नया जीवन दान देने का कार्य कुसुम कुमार ने करने की कोशिश की है। कुसुम कुमार नाटककार के रूप में विशेष ख्याति प्राप्त की है। कुसुम कुमार का पहला नाटक 'ओम क्रांति क्रांति' **(1978)** यह उनका पहला नाटक है। इस नाटक के लेखन की प्रेरणा के संदर्भ में डॉ.ब्रजराज किशोर का कथन उल्लेखनीय है। कुछ काल भारत तक लेखिका ने दिल्ली विश्वविद्यालय के दो महिला महाविद्यालय में अध्यापन किया और वहाँ जो देखा, भोगा वह इतना नाटकीय और विडम्बनापूर्ण था कि इसने लेखिका को अभिव्यक्ति के लिए विवश कर दिया। ऐसे अनेक कारण इस नाटक में दिखाई देते है। 'सुनो शेफाली' यह नाटक इस विषमता से युक्त व्यवस्था की बेनकारी करता है। सामाजिक समता एवं दलितोद्धार के नाम पर भी समाज के प्रस्थापित लोग किस प्रकार अपना स्वार्थ निकालने में लगे है तथा उनके द्वारा गरीबी भावनाओं के साथ किस प्रकार से खिलवाड किया जाता है उसे अभिव्यक्त करने का प्रयास किया। 'सुनो शेफाली' दलित चेतना की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण नाटक है। सुख के खोज में आए लोगों को वह उन्हीं उपायों को बनाता है जिससे सामाजिक दायित्वों की पूर्ति हो सके। 'सुनो शेफाली' नाटक आत्मसम्मानी, स्वाभिमानी, नीडर एवं सामाजिक समता की हिमायती शेफाली की इस षडयंत्रकारी और पाखण्डी व्यवस्था के विरुद्ध लडाई की कहानी है।

शेफाली एक स्वाभिमानी लडकी है इसकी प्रतीति उस समय हो जाती है जब वह सोचती है कि वह स्वयं दलित होने के कारण उसे हमदर्दी, दयाभाव और दलित होने के कारण मिलनेवाली सुविधाओं को भी अस्वीकार करती है। परिणामतः वह कॉलेज में मिलनेवाली स्कॉलरशिप मुफ्त में मिलनेवाली किताबें, ड्रेस

आदि नहीं लेती। बकुल के साथ संपर्क में आने पर जब माँ उसके झूठे शरीर के बारे में चिन्तित होती हुई दिखाई देती है। तब शेफाली माँ से कहती है-"अम्मा तू मेरी माँ है।... तुझसे मेरी ही तरफदारी करते नहीं बनता? बकुल के प्यार में जो कुछ भी होता रहा, मैं कुछ समझ नहीं पायी, लेकिन अम्मा किसी के पास आबरू थी, हमने गलती से कुछ खो भी दी होगी, पर वे जो बडे ऊँचे खानदानी लोग हैं, उनकी आबरू कहाँ थी? आबरू अगर सिर्फ जिस्म का ही दूसरा नाम है तो उनकी आबरू भी कम नहीं खोई होगी।" यहाँ लेखिका ने नारी विचार शक्ति को अधिक प्रबल बनाती है। शेफाली की यह व्यथा नारी विषयक चली आ रही मान्यताओं पर प्रश्नचिह्न बनकर उभरती है। इस प्रकार "ओम क्रांति क्रांति' नाटक समकालीन समाज में छात्र और विद्यार्थियों के आपसी संबंधों को अभिव्यक्ति देता है और अल्पज्ञानी अध्यापकों की ज्ञानसीमा पर भी छँगली उठाता हुआ दिखाई देता हे। 'सुनो शेफाली' नाटक में तथाकथित समाज सेवी और दलित शोषण की समस्या का चित्रण कर राजनेताओं की भ्रष्ट प्रवृतियों का पर्दाफाश किया गया है। दिल्ली ऊँचा सुनती है" आज की कार्यालयीन व्यवस्था के शिकार बने आम आदमी की कहानी है। 'रावणलीला' में छोटे से कस्बे में स्थानीय मंडली द्वारा रामलीला प्रस्तुत करने की घटना को चित्रित करती है। यथार्थ और व्यक्तिगत जीवन के भावों को अन्य पात्रों पर व्यक्त करता है। इसमें लक्ष्मण को घुसे मारना, राम-रावण युद्ध में राम के हाथों न मरना आदि का उल्लेख किया जा सकता है। वह अपने व्यवहार तथा बर्ताव से रामलीला को रावणलीला में परिवर्तित करता है।

इस प्रकार दलित साहित्य का जन्म अस्पृश्यता, दलितों की परेशानी, गुलामी, पारिवारिक विघटन, दुःख, गरीबी और उपेक्षापूर्ण जीवन से ही हुआ है। इसे चित्रित करना, वास्तविकता का बोध कराने वाला साहित्य ही दलित साहित्य है। उनकी संवेदना और उनमें चेतनाए क्रांति उत्पन्न करने का काम साहित्यकार करता है।

----------00--------

संदर्भ सूची

1- डॉ.जयशंकर मिश्र : प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, पृ.407
2- डॉ.चन्द्रकुमार वरढे-दलित साहित्य आन्दोलन, पृ.67
3- कुसुम कुमार-सुनो शेफाली, पृ.38

----------00--------